BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

विषय – हिंदी कक्षा– दसवीं

प्रिय विद्यार्थियों ,

अब हम गद्य खंड का प्रथम पाठ 'बड़े भाई साहब ' पढ़ेंगे |

निर्देश----

-- दिए गए लिंक को ध्यान से देखो |

-- नीचे दिए हुए पाठ परिचय को ध्यान से पढ़े |

-- फिर सभी बच्चे कहानी को ध्यान से पढ़ेंगे |

-- कठिन शब्दों के अर्थ पाठ के अंत में दिए गए है |

-- सभी बच्चे कठिन शब्द अपनी नोटबुक में लिखेंगे |

नीचे दिए गए लिंक के द्वारा पाठ को समझें -

https://youtu.be/chsYTbe5-n4

नीचे दिए गए लिंक के द्वारा पूर्ण पाठ को पढ़ें -

http://ncertbooks.prashanthellina.com/class_10.Hindi.Sparsh/ch-10.pdf

पाठ का परिचय

लेखक का बड़ा भाई 14 वर्ष का और लेखक नौ वर्ष का था। लेखक के बड़े भाई साहब अध्ययनशील थे। सारा दिन किताबें खोले बैठे रहते थे। वे पढ़ाई में चाहे कैसे भी हो लेकिन बड़ा होने के नाते लेखक को डांट -डपटना और उस पर निगरानी करना अपना परम-धर्म समझते थे। लेखक का मन पढ़ाई में कम लगता था। इसलिए यह मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आकर खूब खेलता था। भाई साहब उपदेश देने की कला में कुशल थे ,जब भी वह खेलकर आता तो वे उसे स्नेह और रोष भरा उपदेश दिया करते- "अंग्रेज़ी पढ़ना हँसी-खेल नहीं है। मैं रात-दिन आंखे फोड़ता हूँ, तब जाकर यह विद्या आती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्घ अंग्रेजी नहीं लिख पाते..."

लेखक बड़े भाई साहब की लताड़ सुनकर रोता रहता। टाइम टेबिल बनाकर बार-बार इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढूंगा किंतु उस पर पूरी तरह अमल नहीं कर पाता । प्रकृति का मोहक वातावरण लेखक को अपनी ओर खींच ले जाता। वह भाई साहब की फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार नहीं कर पाता। वार्षिक परीक्षा हुई। भाई साहब फिर से फेल हो गए। अब केवल दो कक्षा का अंतर रह गया दोनों भाई के बीच । लेखक भाई साहब से कहना तो चाहता था पर चुप रहा। पर एक दिन भाई साहब लेखक पर टूट पड़े-"इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए हो तो तुम्हें घमंड हो गया है। घमंड तो बड़े- बड़ों का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है?" उन्होंने ऐतिहासिक उदाहरणों द्वारा भाई को घमंड न करने की सलाह दी। भाई साहब बोले-"मेरे भाई। फेल होने पर न जाओ। मेरी कक्षा

में पहुँचोगे तो दाँतों पसीना आ जाएगा। साथ ही उन्होंने आगे की कठिन पढ़ाई से डराया भी। इतिहास और ज्योमैट्री की कठिनाइयों का उल्लेख भी किया। परीक्षा में पास होने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। भाई साहब ने अगले दर्जे की पढ़ाई का भयंकर चित्र खींचा, जिसे सुनकर लेखक भयभीत हो उठा परंतु उसकी रुचि फिर भी पुस्तकों की ओर न बन सकी। अब वह चोरी-चोरी खेलने जाने लगा। फिर सालाना परीक्षा हुई। संयोग से लेखक तो पास हो गया और भाई साहब फिर फेल हो गए। कक्षा में प्रथम आने पर लेखक को खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने कठोर परिश्रम किया था परंतु बेचारे फेल हो गए। लेखक को उन पर दया आती थी। अब लेखक और भाई के बीच में केवल एक कक्षा का अंतर रह गया था। अब भाई साहब कुछ नरम पड़ गए थे। वे समझने लगे थे कि अब मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा। अब लेखक के मन में यह बात बैठ गई कि वह पढ़े या न पढ़े, पास हो ही जाएगा। एक दिन लेखक संध्या के समय होस्टल से दूर कनकौआ लूटने के लिए जा रहा था। सहसा लेखक की मुठभेड़ भाई साहब से हो गई। उन्होंने काफी डाँटा-फटकारा। उन्होंने कहा कि एक जमाना था जब आठवीं कक्षा पास करके लोग नायब तहसीलदार बन जाते थे,अन्य कई अच्छे-अच्छे पदों पर नियुक्त हो जाते थे और एक तुम हो जो आठवीं कक्षा में आकर भी लड़कों के साथ कनकौए लूटने के लिए दौड़ रहे हो। हो सकता है तुम अगले साल मेरे बराबर हो आओ, या आगे भी निकल जाओ, पर मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। घर का काम-काज और खर्च का हिसाब घर के बड़े-बूढ़े ही ठीक प्रकार से रख पाते हैं। लेखक बड़े भाई साहब की युक्ति के सामने नतमस्तक हो गया। तब लेखक को अपने छोटेपन का अनुभव हुआ ,भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई। तब भाई साहब ने लेखक को गले लगा लिया। तभी एक कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा।भाई साहब लंबे थे अतः उन्होंने उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की ओर दौड़े। लेखक भी उनके पीछे-पीछे दौड़ा |

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीर बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस- बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते है जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य । मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अमीना, भाइयों -भाइयों दरअसल , भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था।मैंने बहुतचेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

प्रश्न

(क) बड़े भाई साहब का स्वभाव कैसा था?

(ख) लेखक बड़े भाई साहब की किस पहेली को सुलझा नहीं पाया था?

(ग) छोटे व बड़े भाई में पढ़ाई के स्तर में कितने दर्जे का अंतर था ?

2 . मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ जैसा था। मौका पाते ही हॉस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं। कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल यह होता कहाँ थे'? हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुंह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई-साहब के लिए उसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

प्रश्न

(क) लेखक का मन पढ़ाई में क्यों नहीं लगता था?

(ख) लेखक को क्या करने में आनंद आता था?

(ग) लेखक अपने बड़े भाई साहब से डरता था। क्यों?

3 . इस तरह अंग्रेजी पढोगे, तो जिंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ न आएगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ लें, नहीं ऐरा -गैरा नत्थू खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो।दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंधा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गवां कर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र -भर इसी दर्जे में पड़े सड़ते रहोगे? अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?"

प्रश्न

(क) बड़े भाई साहब ने लेखक को क्यों डांटा? बड़े भाई साहब के अनुसार अंग्रेजी कैसी भाषा है?

(ख) बड़े भाई ने लेखक को कौन-कौन सा डर दिखाया?

(ग) बड़े भाई ने लेखक को किस चीज़ का वास्ता देकर पढ़ने को कहा?

BBPS, PITAMPURA